# रूहानी ज़िक्रो फ़िक्रे अअ़माले शअ़बान

## सलामे मोहम्मदी ﷺ

चहल मीम ग़ैर मन्क़ूत (18)

मुरत्तिब

मोहम्मद अ़ज़ीज़ सुल्तान नाचीज़

٧٨٦ ٩٢

# रूहानी ज़िक्रो फ़िक्र अअ़माले शअ़बान

٧٨٦/٩٢

نقش تحفۂ روحانی وحل المشکلات

مَعَ اسْمِ اللہِ الْمَلِکِ السَّلٰمِ

ص م ح م د صلی اللہ علیہ وسلم

ص ح م د م صلی اللہ علیہ وسلم

ص م د م ح صلی اللہ علیہ وسلم

ص د م ح م صلی اللہ علیہ وسلم

اس نقش کو دیکھنے والے کی ہر مشکل حل ہو گی انشاء اللہ

## सलामे मोहम्मदी ﷺ चहल मीम ग़ैर मन्कूत़

18



मुरत्तिब

बमौक़ा शअ़बान 1438हि0

बफ़ैज़े रूहानी सय्यिदुना मोहयुद्दीन व सय्यिदुना मोईनुद्दीन व ह़ज़रात मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ رضی اللہ عنہم

मोहम्मद अ़ज़ीज़ सुल्त़ान नाचीज़

# फ़हरिस्त


| न० | मज़मून | स० |
|---|---|---|
| 1 | सलामेमोहम्मदी ﷺ चहल मीम ग़ैरमन्कूत़ (१८) | 3 |
| 2 | फ़ज़ीलते सलामेमोहम्मदी ﷺ चहल मीम ग़ैर मन्कूत़(१८) | 8 |
| 3 | फ़ज़ाएले शअ़बान व शबे बरात | 9 |
| 4 | दुआ़ए शबे बरात | 20 |
| 5 | ह़दीसे जिब्रईल अ़लैहिस्सलाम और अअ़माले सूफ़िया रूह़ानी तअ़लीम के ह़वाले से | 27 |
| 6 | ईमानो इस्लाम व एह़सान की नफ़्ल नमाज़ें | 33 |
| 7 | दरसे रूह़ानी | 35 |
| 8 | दुरूदे पाक | 37 |
| 9 | मक़बूल इन्दल्लाह अअ़माल.....सिर्फ़ अच्छे अअ़माल | 40 |

# सलामे मोहम्मदी ﷺ
# चहल मीम ग़ैरमन्कूत़ (18)

मअ़स्मिल्लाहिल मालिकिस्सलामि अल्हम्दु लिल्लाहि मौलाई हुवल्लाहु इलाहुन अ़लीयुन दाइमुम्मोअ़ति़न लाइलाह इल्लल्लाहु मुह़म्मदुर रसूलुल्लाहि अल्लाहु ला इलाह इल्लाहुवल हादिल वालि ला इलाह इल्लल्लाहु स़ल्लि वसल्लिम दाइमन अ़ला मौलाई व मौलल मक्कीयि वल ह़र मीयि व कुल्लिलआ़लमि व मद्दआ लिअ़लीयिन हुवल मौला व इस्मुहू ह़ाम्मीम व ह़ामिदूँ व मह़मूदूँ व अह़मदु व त़ा सीम्मीम व मुह़म्मदुर रसूलुल्लाहि वस़ा र वालिदुहू औसअ़लवालिदि

वउम्मुहू औसअ़लउम्मि वआलुहू औसअ़लआलि वअ़ला वालिदिही व उम्मिही व आलिही वलमौला अ़लिय्यिवँ व वलदै अ़लिय्यिवँ व उम्मिहिमा व मुह़यिल इस्लामि व आलिही व वालिल इस्लामि व आलिही व अह़ म द व लिय्यिल्लाहि वह़वारिय्यि वलिय्यिल्लाहि वआलिही वकुल्लि उममि रसूलिल्लाहि कुल्लल ह़ालि ।

**मुराद** अल्लाह के इस्म के सहारे कि वही मालिक व सलामी वाला है। सारी ह़म्द अल्लाह के लिए है हमारा मौला वह अल्लाह है कि इलाह है अअ़ला है दवाम वाला है कमाले अ़ता वाला है वाह़िद अल्लाह ही इलाह है मोह़म्मद ﷺ अल्लाह का रसूल है अल्लाह है वाह़िद वही इलाह है वह हादी है मददगार है वाह़िद अल्लाह ही इलाह है दाइमी दुरूदो सलाम हमारे

मौला के लिए वारिद है मक्का वाले और ह़रम वाले और सारे आ़लम के मौला के लिए हो और इस अम्र के दाई़ के लिए हो कि अ़ली मौला है और उस मौला का इस्म ह़ाम्मीम है ह़ामिद व मह़मूद और अह़मद है और त़ा सीम्मीम है और मोह़म्मद ﷺ अल्लाह का रसूल है और उस रसूल के वालिद कमाल समाई वाले हुए सारे वालिद से और माँ सारी माओं से और आलो औलाद सारी आलो औलाद से और (दुरूदो सलाम) उस रसूल के वालिद के लिए हो और माँ के लिए हो और आल के लिए हो, मौला अ़ली के लिए हो, मौला अ़ली के लाडलों के लिए हो और मौला अ़ली के लाडलों की वालिदह के लिए हो, इस्लाम के मुह़यी के लिए हो और आल के लिए हो, इस्लाम के मददगार के लिए हो और आल के लिए हो और अह़मद वलीयुल्लाह के लिए हो और वलीयुल्लाह के हम दमों के लिए हो और आल के लिए हो, अल्लाह के रसूल की सारी उमम के लिए हो हर दम ।

**तौज़ीह़ी तर्जमाः-** अल्लाह के इस्म के साथ जो मालिक है सलामती देने वाला है तमाम तअ़रीफ़ अल्लाह के लिए है मेरा मौला वह अल्लाह है जो मअ़बूद है बुलंदी वाला है हमेशगी वाला है और ख़ूब अ़त़ा करने वाला है अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं मोह़म्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं अल्लाह है उस के सिवा कोई मअ़बूद नहीं वही हिदायत देने वाला है वही मददगार है अल्लाह के सिवा कोई मअ़बूद नहीं तू ख़ूब ख़ूब दाइमी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा मेरे मौला पर मक्का वालों और ह़रम वालों के मौला पर और सारे आ़लम के मौला पर और उस ज़ात पर कि जिसने अ़ली को मौला कहा आप ﷺ का इस्मे पाक हाम्मीम है ह़ामिद व मह़मूद और अह़मद है त़ा सीम्मीम और मोह़म्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं कि जिनके वालिद (सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह रदि़यल्लाहु अ़न्हु)तमाम वालिद में सब से ज़्यादा कुशादगी वाले हैं और जिनकी माँ (बी बी

आमिना रदि़यल्लाहु अ़न्हा) तमाम माओं में सबसे ज़्यादा कुशादगी वाली हैं और जिनकी आलोऔलाद तमाम आलो औलाद में सबसे ज़्यादा कुशादगी वाले हैं और (दुरूदोसलाम नाज़िल हो)आपﷺके वालिद पर और आपﷺकी वालिदह पर और आल पर, ह़ज़रत मौला अ़ली रदि़यल्लाहु अ़न्हु पर और मौला अ़ली के दोनों लाडलों इमामे ह़सन व इमामे हुसैन अ़लैहिमस्सलाम पर और ह़स्नैन करीमैन की वालिदह ख़ातूने जन्नत सय्यिदह बीबी फ़ातेमा ज़हरा रदि़यल्लाहुअ़न्हा पर और दीन के ज़िन्दा करने वाले मुह़युद्दीन सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी रदि़यल्लाहुअ़न्हु पर आप की आल पर और दीन के मददगार ख़्वाजा मोईनुद्दीन ह़सन सन्जरी पर आप की आल पर और ह़ज़रत मख़्दूम सय्यिद अह़मद वलीयुल्लाह पर आप के अस्ह़ाबे रूह़ानी पर और आल पर, और अल्लाह के रसूल के सारे उम्मतियों पर हर दम ।

# फ़ज़ीलते सलामे मोहम्मदी ﷺ चहल मीम ग़ैर मन्कूत़(18)

यह "सलामे मोहम्मदी ﷺ चहल मीम" जो कि 40 मीम के साथ बेग़ैर नुक़्ते वाले हुरूफ़ पर मुश्तमिल है इस का तर्जमा भी ग़ैर मन्कूत़ है जिस को समझने के लिए तौज़ीही तर्जमा शामिल है जो शख़्स इस दुरूद को रोज़ाना 100/11/5 बार पढ़ने का अपना मअ़मूल बनाएगा उसे अल्लाहो रसूल की खुश्नूदी ह़ासिल होगी और उसे सेह़तो सलामती ह़ासिल होगी और वह तमाम महीनों व बिल्खुसूस़ माहे शअ़बान के अन्वारो बरकात से नवाज़ा जाएगा और ह़ज़रत मौला अ़ली रदियल्लाहु अ़न्हु के बाबे इल्मो ह़िक्मत की मअ़रिफ़त से नवाज़ा जाएगा और वह मुस्तजाबुद्दअ़वात होगा नीज़ उसे अहले बैत की शफ़्क़तो मोह़ब्बत ह़ासिल होगी और उनका दीदार नसीब होगा ईमान पर ख़ातेमा होगा । इन्शाअल्लाहु तआ़ला।

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम।

# फ़ज़ाएले शअ़बान व शबे बरात

शअ़बान दर अस्ल शअ़बुन से मुश्तक़ है इस का मअ़ना है पहाड़ में जाने का रास्ता और यह भलाई का रास्ता है शअ़बान से ख़ैरे कसीर निकलती है एक क़ौल के मुताबिक़ तशअ़ऊ़बुन से माख़ूज़ है और तशअ़ऊ़ब के मअ़ना तफ़र्रुक़ के हैं चूँकि इस माह में भी ख़ैरे कसीर मुतफ़र्रिक़ होती है नीज़ बंदों को रिज़्क़ इस महीना में मुतफ़र्रिक़ और तक़सीम होते हैं हुज़ूर सय्यिदी ग़ौसुल अअ़ज़म रदि़यल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि शअ़बान में पाँच ह़रफ़ है 1.शीन 2.ऐन 3.बा 4.अलिफ़ 5.नून। पस शीन से शर्फ़ और ऐन से उ़लू (बुलंदी) और बा से बिर्र (यअ़नी भलाई) और अलिफ़ से उल्फ़त और नून से नूर मुराद है लिहाज़ा अल्लाह तआ़ला माहे शअ़बान में अपने बंदों को यह पाँच चीज़ें अ़ता फ़रमाता है नीज़ आप फ़रमाते हैं

इस महीने में महबूबे खुदा ﷺ पर दुरूद शरीफ़ की कस्रत करनी चाहिए क्यों कि यह महीना हुज़ूर अक्दस ﷺ का महीना है दुरूद शरीफ़ और इस महीने के वसीले से बारगाहे इलाही में कुर्ब हासिल करना चाहिए।

(गुन्यतुत्तालिबीन अरबी सफ़ा 288)

उम्मुल मोमेनीन हज़रत आइशा रदियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं नबीये अकरम ﷺ बअज़ औक़ात बकस्रत रोज़े रखते यहाँ तक कि हम कहते अब नहीं छोड़ेंगे और कभी मोसल्सल रोज़ा न रखते यहाँ तक कि हम कहते अब रोज़ा नहीं रखेंगे और मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ को रमज़ानुल मुबारक के एलावह मोकम्मल महीना रोज़ा रखते नहीं देखा और माहे शअबान के एलावा किसी महीने में ज़्यादा रोज़े रखते नहीं देखा।

हज़रत साबित, हज़रत अनस रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत करते हैं कि नबीये अकरम ﷺ से बेहतरीन

रोज़ों के बारे में पूछा गया तो आप ने फ़रमाया रमज़ान की तअ़ज़ीम के लिए शअ़बान के रोज़े रखना।

ह़ज़रत अनस बिन मालिक रदि़यल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूले अक्रम ﷺ ने फ़रमया शअ़बान को इस लिए शअ़बान कहते हैं कि इस में रमज़ानुल मुबारक के लिए बहुत ज़्यादा नेकियाँ फूटती हैं।

ह़ज़रत अनस बिन मालिक रदि़यल्लाहु अ़न्हु से मरवी है फ़रमाते हैं कि नबीये अक्रम ﷺ ने फ़रमाया तमाम महीनों पर रज्जब की फ़ज़ीलत ऐसे है जिस तरह़ कुर्आने पाक तमाम किताबों से अफ़ज़ल है और शअ़बान बाक़ी महीनों से इसी त़रह़ अफ़ज़ल हैं जिस त़रह़ मुझे बाक़ी अम्बियाए किराम पर फ़ज़ीलत ह़ासि़ल है।

ह़ज़रत अ़ली कर्रमल्लाहु वज्हहू नबीये अकरम ﷺ से रिवायत करते हैं आपने इरशाद फ़रमाया अल्लाह तआ़ला निस्फ़ शअ़बान की रात को (अपनी शान के लाएक़)

आसमाने दुन्या पर नुजूल फ़रमाता है और मुश्रिक, कीना परवर और रिश्तादारी खतम करने वाले और ज़ेना कार के एलावा तमाम मुसल्मानों को बख़्श देता है।

हज़रत आइशा रदियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं मैं ने एक रात नबीये अकरम ﷺ को न पाया मैं बाहर निकली देखा कि जन्नतुल बक़ीअ़ में हैं और सरे अन्वर आसमान की त़रफ़ उठाए हुए हैं आप ने फ़रमाया क्या तुझे डर था कि अल्लाह और उसके रसूल तुझ पर ज्यादती करेंगे मैं ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मुझे ख़्याल हुवा कि आप किसी दूसरी ज़ौजा के यहाँ तशरीफ़ लेगए नबीये अकरम ﷺ ने फ़रमाया बेशक अल्लाह तआ़ला शअ़बान की पंद्रहवीं रात को आसमाने दुन्या पर नुजूल फ़रमाता है और बनू कल्ब क़बीला की बकरियों के बालों से ज़्यादा लोगों को बख़्श देता है।

हज़रत अ़त़ा बिन यसार रदियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं

शअ़बान की पंद्रहवीं रात को आइंदा साल के अअ़माल पेश किए जाते हैं एक शख़्स सफ़र पर निकलता है हालाँ कि उस का नाम ज़िन्दों की फ़हरिस्त से मरने वालों की फ़हरिस्त में लिख दिया जाता है कोई शख़्स शादी करता है हालाँ कि वह भी ज़िन्दों में से निकाल कर मुर्दों की जमाअ़त में लिख दिया जाता है।

हज़रत अबू हुरैरह रदियल्लाहु अ़न्हु से मरवी है नबीये अकरम ﷺ ने फ़रमाया हज़रत जिब्रईल अ़लैहिस सलाम शअ़बान की पंद्रहवीं रात को मेरे पास आए और कहा ऐ मोहम्मद ﷺ आसमान की तरफ़ सर उठाएं आप फ़रमाते हैं मैं ने पूछा यह रात क्या है हज़रत जिब्रईल अ़लैहिस्सलाम ने जवाब दिया यह वह रात है जिस में अल्लाह तआ़ला रहमत के दरवाज़ों में से तीन सौ दरवाजे खोलता है और हर उस शख़्स को बख़्श देता है जो मुश्रिक न हो अल्बत्ता जादूगर काहिन, आदी

शराबी, बार बार सूद खाने वाले और ज़ेना कार की बख़्शिश नहीं होती जबतक तौबा न करे जब रात का चौथाई हिस्सा हुवा तो हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने उतर कर अर्ज़ किया ऐ मोहम्मद ﷺ अपना सरे अक़्दस उठाएं आप ने सरे अन्वर उठाकर देखा तो जन्नत के दरवाज़े खुले थे और पहले दरवाज़े पर एक फ़िरिश्ता निदा देरहा था इस रात को रूकूअ करने वाले केलिए खुश ख़बरी है दूसरे दरवाज़े पर खड़ा फ़िरिश्ता पुकार रहा था उस शख़्स के लिए खुश ख़बरी है जिस ने सिज्दा किया तीसरे दरवाज़े पर फ़िरिश्ता कह रहा था इस रात दुआ मांगने वाले केलिए खुश ख़बरी है चौथे दरवाज़े पर खड़ा फ़िरिश्ता निदा देरहा था इस रात ज़िक्र खुदावंदी करने वालों के लिए खुश ख़बरी है पाँचवें दरवाज़े पर फ़िरिश्ता पुकार रहा था इस रात अल्लाह के ख़ौफ़ से रोने वाले के लिए खुश ख़बरी है छटटे दरवाज़े

पर फ़िरिश्ता था जो कह रहा था इस रात तमाम मुसल्मानों के लिए खुश ख़बरी है सातवें दरवाज़े पर मौजूद फ़िरिश्ते की यह निदा थी कि कोई साएल है जिस को सुवाल के मुताबिक़ अ़ता किया जाए आठवें दरवाज़े पर फ़िरिश्ता कह रहा था क्या कोई बख़्शिश का त़ालिब है जिस को बख़्श दिया जाए नबीये अकरम ﷺ फ़रमाते हैं मैं ने पूछा ऐ जिब्रईल यह दरवाज़े कब तक खुले रहेंगे उन्हों ने अ़र्ज़ किया रात के शुरूअ़ से तुलूए फ़ज्र तक फिर अ़र्ज़ किया ऐ मोहम्मद ﷺ इस रात अल्लाह तआ़ला क़बीलए बनूकल्ब की बकरियों के बालों के बराबर लोगों को जहन्नम से आज़ाद करता है।

(गुन्यतुत्त़ालेबीन मुतर्जम स0 443,445,450)

ह़ज़रत अनस रदि़यल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं जो माहे शअ़बान में एक रोज़ा रखता है वह जन्नत में ह़ज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम का हम साया होगा और उसे

ह़ज़रत अय्यूब व ह़ज़रत दाऊद अलैहिमस्सलाम जैसी एबादत का सवाब अ़ता होगा जो माहे शअ़बान के मोकम्मल रोज़े रखता है अल्लाह तआ़ला उसे सक्राते मौत से नजात अ़ता फ़रमाता है वह क़ब्र की तारीकी और मुन्कर व नकीर की दहशतो हैबत से महफ़ूज़ होजाता है।

नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया जो शबे बरात एबादत में गुज़ारता है और दिन को रोज़ा रखता है उस का दिल उस दिन ज़िन्दा होगा जबकि दोसरों के दिल मुर्दा होचुके होंगे यअ़नी उस का दिल रोज़े क़ियामत मुत्मइन रहेगा।

जब शअ़बानुल्मुबारक का चाँद देखे तो बाद नमाज़े मग़रिब 12 रकआ़त नफ़्ल नमाज़ें दो दो रकअ़त कर के पढ़े इस त़रह़ कि पहली रकअ़त में अल्ह़म्दु शरीफ़ के बाद सूरए क़द्र तीन बार पढ़े या आयतुल्कुर्सी एक बार

पढ़े और दूसरी रकअ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बाद सूरए इख़्लास़ तीन बार पढ़े।

पंद्रहवीं शअ़बान को बाद नमाज़े मग़रिब उम्र की दराज़ी की निय्यत से दो रकअ़त नमाज़ नफ़्ल इस त़रह़ पढ़े कि दोनों रकअ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बाद 10/10 बार सूरए इख़्लास़ पढ़े नीज़ रिज़्क़ की कुशादगी के लिए दो रकअ़त नमाज़ नफ़्ल भी पढ़े इस त़रह़ कि दोनों रकअ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बाद 7/7 बार सूरए इख़्लास़ पढ़े।

मशइख़े अहले सुन्नत ने फ़रमाया है कि शबे बरात को स़लातुत्तस्बीह़ पढ़े।

**नीयते स़लातुत्तस्बीह़ः** नीयत की मैं ने चार रकअ़त स़लातुत्तस्बीह़ की, वास्ते अल्लाह तआ़ला के मुंह मेरा कअ़बा शरीफ़ की त़रफ़ अल्लाहु अक्बर। तकबीरे तह़रीमा के बाद सना पढ़ेः **सुब्ह़ान क अल्लाहुम्म व**

**बिह़म्दि क व तबा र कस्मु क व त आ़ला जद्दु क वलाइला ह ग़ैरु क।** फ़िर 15 बार **सुब्ह़ानल्लाहि वल्ह़म्दुलिल्लाहि वलाइला ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बरु** पढ़े फिर अऊ़ज़ुबिल्लाह व बिस्मिल्लाह के साथ सूरए फ़ातिह़ा और कोई सूरत तिलावत करने के बाद 10 बार मज़्कूरा कल्माते तस्बीह़ पढ़े फिर रूकूअ़ में 10 बार, रूकूअ़ से सर उठाने के बाद 10 बार पहले सिज्दा में 10 बार सिज्दा से सर उठाने के बाद 10 बार दूसरे सिज्दा में 10 बार पढ़े। रूकूअ़ और सुजूद में सुब्ह़ा न रब्बियल अ़ज़ीम और सुब्ह़ा न रब्बियल अअ़ला कहने के बाद तस्बीह़ात पढ़े। बाक़ी तीन रकअ़तों में बेग़ैर सना पढ़े सूरए फ़ातिह़ा के पहले 15 बार मज्कूरह तस्बीह़ पढ़े। वाज़ेह़ हो कि हर रकअ़त में 75 बार यह तस्बीह़ पढ़ी जाएगी यह तस्बीह़ चार रकअ़त में 300 बार होगी इस के बाद 70 बार लाह़ौ ल वला कुव्व त इल्ला

बिल्लाहि और 70 बार दुरूद शरीफ़ फिर 15 बार यह दुआ़ए मासूरह पढ़े।

**दुआ़ए मासूरहः** अल्लाहुम्मग्फ़िरली वलि वालि दय्य वलिमन तवा ल द व लिमन अह़ब्बनी वलिजमीइ़ल मुअमिनी न वल मुअमिनाति वल मुस्लिमी न वल मुस्लिमातिल अह़याइ मिन्हुम वल अम्वाति अज्मइ़ न बिरह़ मति क या अर्ह़मर्राह़िमीन।

**तर्जमाः** ऐ हमारे अल्लाह तू मुझे बख़्श दे मेरे वालिदैन को बख्श दे मेरे अहलो अ़याल को बख़्श दे मेरे अह़बाब को बख़्श दे और तमाम मर्दो औ़रत तमाम मुसल्मान मर्दो औ़रत ज़िन्दों और मुर्दों में से सब को बख़्श दे ऐ तमाम रह़म करने वालों में सब से ज्यादा मेहरबान तेरी रह़मत का वास्ता है।

उस के बाद यह दुआ़ए शबे बरात पढ़े जिसे

इमामुल मुकाशेफ़ीन सय्यिदुना मोह़युद्दीन इब्ने अ़रबी रह़मतुल्लाहि अ़लैह ने ब्यान फ़रमाया है यह उन के मअ़मूलात में से है जिस के बे शुमार फ़ुयूज़ो बरकात हैं।

# दुआ़ए शबे बरात

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम।

अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़जुबि अफ़्वि क मिन इक़ाबि क व अऊ़जु बिरिदा़इ क मिन स ख़ ति क व अऊ़जु बि क मिन्क जल्ल वज्हु क ला उह़्सी सना अन अ़लै क अन्त कमा अस्नै त अ़ला नफ़्सि क अल्लाहुम्म या ज़ल्मन्नि वला युमन्नु अ़लै क या ज़ल्जलालि वल इक्रामि या ज़त्तौलि वल इन्आ़मि लाइला ह इल्ला

अन्त या ज़हीररर्राजी न व या जारल मुस्तजीरी न व या स़रीख़ल मुस्तस़्रिख़ी न व या अमानल ख़ाइफ़ी न व या दलीलल मुतह़य्यिरी न व या ग़ियासल मुस्तग़ीसी न व या अर्ह़मर्राह़िमी न अल्लाहुम्म इन्कुन्त कतब्तनी फ़ी उम्मिल किताबि इ़न्द क शक़ीयन फ़म्हु अ़न्नी इस्मश्शक़ावति व इन्कुन्त कतब्तनी इ़न्द क सई़दन ग़नीयन फ़स्बित व इन्कुन्त कतब्तनी फ़ी उम्मिल किताबि इ़न्द क मह़रूमम्मुक़्तरन अ़लैय्य रिज़्क़ी फ़म्हु अ़न्नी ह़िर्मानी व तक़्ती र रिज़्क़ी वक्तुब्नी इ़न्द क ग़नीयम्मुवफ़्फ़क़ल लिल ख़ैरि

मुवस्सिअ़न अ़लैय्य रिज़्क़ी फ़ इन्न क
कुल्त फ़ी उम्मिल किताबि यम्हुल्लाहु
मायशाउ व युस्बितु व इ़न्दहू उम्मुल
किताबि इलाही बित्तजल्ली यिल्अ़ज़मि
फ़ी लैलतिन्निस्फ़ि मिन शअ़बानल
मुकर्रमिल लती युफ़्रकु फ़ीहा कुल्लु
अम्रिन ह़कीमिन व युब्रमु इक्शिफ़ अ़न्नी
मिनल्बलाइ माअ़लमु वमालम अ़लम
वग़्फ़िरली माअन्त बिही अ़लमु इन्न क
अन्तल अ़ज़्ज़ुल अक्रमु व स़ल्लल्लाहु
अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिवँ व अ़ला
आलिही वस़ह़बिही व सल्ल म।

तर्जमाः अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बड़ा मेहरबान

निहायत रहम फ़रमाने वाला है, ऐ हमारे अल्लाह बेशक मैं तेरे अ़फ़्वो दर गुज़र की पनाह लेता हूँ तेरे अ़ज़ाब से और मैं तेरी खुश्नूदी की पनाह लेता हूँ तेरी नाराज़ी से और मैं तेरी पनाह लेता हूँ तुझी से, तेरी ज़ाते पाक बुजुर्ग है मैं तेरी ज़ात के लाएक़ वैसी तअ़रीफ़ नहीं कर सकता जैसी तअ़रीफ़ खुद तूने अपनी ज़ात के लाएक़ की है ऐ हमारे अल्लाह ऐ एहसान फ़रमाने वाले तुझ पर एहसान नहीं किया जासकता ऐ बुजुर्गी व करामत वाले ऐ खूब अ़ता फ़रमाने वाले इन्आ़म फ़रमाने वाले तेरे सिवा कोई मअ़बूद नहीं ऐ उम्मीदवारों की पुश्तपनाही फ़रमाने वाले ऐ पनाह चाहने वालों को पनाह देने वाले ऐ फ़रयाद चाहने वालों की फ़रयाद को पहुँचने वाले ऐ डरने वालों को अमन देने वाले ऐ परीशान हाल लोगों के रहनुमा ऐ फ़रयाद रसी चाहने वालों के फ़रयाद रस ऐ तमाम रहम करने वालों में सब से ज़्यादा मेहरबान ऐ

हमारे अल्लाह अगर तूने मुझे अपने पास की उम्मुल किताब में बदबख़्त लिखा है तो तू मुझ से बदबख़्ती के निशान को मिटादे और अगर तू मुझे अपने हुज़ूर नेक बख़्त ग़नी लिख रखा है तो तू उस को बाक़ी रख और अगर तूने मुझे अपने हुज़ूर की उम्मुल किताब में महरूम लिखा या मुझ पर मेरा रिज़्क़ तंग लिखा तो तू मुझ से मेरी महरूमी और मेरे रिज़्क़ की तंगी को मिटा दे और तू मुझे अपने हुज़ूर ग़नी, भलाई की तौफ़ीक़ वाला और रिज़्क़ में कुशादगी वाला लिख दे क्यों कि तेरा ही फ़रमान है उम्मुल किताब में, अल्लाह जो चाहता है मिटा देता है और जो चाहता है बाक़ी रखता है और उसी के हुज़ूर उम्मुल किताब है ऐ हमारे मअ़बूद शअ़बानुल मोकर्रम की आधी रात में होने वाली उस अ़ज़ीम तजल्ली का वास्ता है जिस में हर हिक्मत वाला अम्र बांटा जाता है और अटल फ़ैसला किया जाता है तू मुझ से उन

तमाम बलाओं को दूर फ़रमादे जिन्हें मैं जानता हूँ या जिन्हें मैं नहीं जानता और तू मेरी उन तमाम चीज़ों को बख़्श दे जिस के बारे में तू बख़ूबी जानता है बे शक तू ही इ़ज़्ज़त वाला करामत वाला है,और ख़ूब दुरूदो सलाम अल्लाह नाज़िल फ़रमाए हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर और आप ﷺ की जुम्ला आल पर और अस्ह़ाब पर।

मशाइख़े अहले सुन्नत ने फ़रमाया है कि शबे बरात में पचास रकअ़त नफ़्ल नमाज़ अदा करना चाहिए हर रकअ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बाद सूरए इख़्लास़ 10 बार पढ़े और जब फ़ारिग़ हो तो सूरए यासीन 3 मर्तबा पढ़े बाद में सलामतिये ईमान और दफ़्ए़ बलीयात की दुआ़ करे और अपनी आरज़ुओं को खुदा के हुज़ूर कहे।

गुन्यतुत्त़ालिबीन में शबे बरात के तअ़ल्लुक़ से एक सौ रकआ़त नवाफ़िल नमाज़ इस त़रह़ वारिद हुई हैं कि उस में 1000 मर्तबा सूरए इख़्लास पढ़ी जाए यअ़नी हर

रकअ़त में 10 बार कुल हुवल्लाहु अह़द पढ़े इस नमाज़ को स़लातुल ख़ैर कहा जाता है इस की बरकत फैल जाती है पहले ज़माने के बुज़ुर्ग यह नमाज़ बाजमाअ़त अदा करते और उस के लिए जमअ़ होते थे, इस की फ़ज़ीलत बहुत ज़्यादा और सवाब बेशुमार है ह़ज़रत ह़सन बस़्री रह़मतुल्लाहि अ़लैह से मरवी है आप ने फ़रमाया मुझ से तीस स़ह़ाबए केराम रदि़यल्लाहु अ़न्हुम ने ब्यान फ़रमाया कि जो शख़्स़ इस रात यह नमाज़ पढ़े अल्लाह तआ़ला उस की त़रफ़ 70 बार नज़रे रह़मत फ़रमाता है और हर नज़र के बदले उस की 70 ह़ाजात पूरी करता है सब से कम दरजे की ह़ाजत मग़्फ़िरत है चौदहवीं को यह नमाज़ पढ़ना भी मुस्तह़ब है क्यों कि इस रात को एबादात के साथ ज़िन्दा रखना भी मुस्तह़सन है ताकि नमाज़ी इस इ़ज़्जत, फ़ज़ीलत और सवाब को भी पाले।

# ह़दीसे जिब्रईल अ़लैहिस्सलाम और अअ़माले सूफ़िया रूह़ानी तअ़लीम के ह़वाले से

मज़्हबे इस्लाम अपने दीन होने की ह़ैसियत से तीन अजज़ा पर मुश्तमिल है अव्वल ईमान दूसरा इस्लाम और तीसरा एह़सान जिस के तअ़ल्लुक़ से इमाम बुख़ारी और इमाम मुस्लिम की रिवायत करदा मुत्तफ़क़अ़लैह ह़दीस में है कि एक रोज़ ह़ज़रत जिब्रईलअमीन अ़लैहिस्सलाम बार गाहे रिसालतमआब ﷺ में इन्सानी शक्ल में ह़ाज़िरहुए और उम्मतकी तअ़लीम के लिए अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह ﷺ मुझे ईमानके बारेमें बताइये कि ईमान क्या है हुज़ूर नबीये अकरम ﷺ ने फ़रमाया ईमान यह है कि तू अल्लाह तआ़ला उस के फिरिश्तों उस के नाज़िल करदा सह़ीफ़ों उस के रसूलों और रोज़े आख़िरत पर ईमान लाए और हर ख़ैरो शर को अल्लाह की त़रफ़ से मुक़द्दर माने, उन्हों ने फ़िर पूछा इस्लाम क्या है हुज़ूर

नबीये अकरम ﷺ ने फ़रमाया इस्लाम यह है कि तू इस बात की गवाही दे कि अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई एबादत के लाएक़ नहीं और मोहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं और यह कि तू नमाज़ क़ाएम करे और ज़कात अदा करे और तू माहे रमज़ान के रोज़े रखे और अगर इस्तिताअ़त हो तो उस के घर का ह़ज करे उस के बाद जिब्रईल अमीन अ़लैहिस्सलाम ने तीसरा सुवाल एह़सान के बारे में किया तो ह़ुज़ूर नबीये अकरम ﷺ ने फ़रमाया एह़सान यह है कि तू अल्लाह तआ़ला की एबादत इस त़रह़ करे गोया तू उसे देख रहा है और अगर तू नहीं देख रहा है तो कम अज़ कम यह यक़ीन ही पैदा कर कि वह तुझे देख रहा है।

दर ह़क़ीकत ईमान, इस्लाम और एह़सान यह सब एक ही सर चश्मा और एक ही मरकज़ से तअ़ल्लुक़ रखते हैं यह तीनों एक दूसरे की बक़ा, तरक़्क़ी और

नश्वो नुमा के लिए लाज़िमो मल्जूम हैं और अगर इन्में से एक भी नज़र अन्दाज़ होजाए तो दूसरे का वुजूद बिगाड़ का शिकार हो कर कमाल से महरूम हो जाता है गोया इन्में से हर एक दूसरे के बेग़ैर अधूरा है, चुनान्चे ईमान के बेग़ैर इस्लाम नातमाम है और इस्लाम के बेग़ैर ईमान की तक्मील नामुम्किन है जब कि एह़सान के बेग़ैर ईमान और इस्लाम दोनों नाक़िस़ रहजाते हैं चुनान्चे सूफ़ियाए किराम फ़रमाते हैं कि अल्लाह के रसूल ﷺ के जुम्ला उमूरो अह़काम और अअ़मालो अफ़्आ़ल में यह तीनों दरजे मौजूद हैं जिन्हें मक़ामात के एअ़तेबार से हर एक मुशाहदा करता है बिह़म्दिल्लाहि तआ़ला व बिकरमि ह़बीबिहिल्अअ़ला ﷺ सय्यिदी हुजूर ग़ौसुल अअ़ज़म व ह़ज़रात मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ रदि़यल्लाहु अ़न्हुम के रूह़ानी फ़ैज़ानो करम से इस नाचीज़ को 6 रकआ़त नवाफ़िल नमाज़ें ऐसी मिली हैं

जिन्में से 2 रकअ़त के अन्दर ईमान का फ़ैज़ मौजूद है और 2 के अन्दर इस्लाम का फ़ैज़ मौजूद है और 2 के अन्दर मक़ामे एह़सान का फ़ैज़ बदर्जए अतम शामिल है आक़ा ﷺ के महीने शअ़बानुल्मुअज़्ज़म के पुर बहार मौक़ा से सय्यिदी हुज़ूर ग़ौसुल अअ़ज़म व हज़रात मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ रदि़यल्लाहु अ़न्हुम की रूह़ानी इजाज़त से यह नफ़्ल नमाज़ हर ख़ास़ो आ़म के लिए ज़ाहिर की जारही है ताकि हर शख़्स़ इस के फ़ुयूज़ो बरकात से माला माल हो इस नमाज़ को हर क़मरी तारीख़ 13/14/15 की शब में अदा करे यह नमाज़े नफ़्ल अल्लाहो रसूल के करम के ख़ज़ानों में से एक अ़ज़ीम नेअ़मत है जिसे अहले रूह़ानिया मअ़मूल में रखते रहे हैं जो शख़्स़ इस नमाज़ को अदा करेगा अगर वह नाक़िसुल्ईमान होगा तो कामिलुल्ईमान बनजाएगा उस के दिल में अल्लाहो रसूल की मोह़ब्बत पैदा होगी और वह

अल्लाहो रसूल का कुर्ब ख़ास़ पाएगा उसका शुमार औलिया के गिरोह में किया जाएगा उसे स़ह़ीह़ त़ौर ये बंदगी कर ने की तौफ़ीक़ मिलेगी उस पर रूह़ो क़ल्ब और सिर्रो ख़फ़ी और अख़्फ़ा के अन्वारो अस्रार के दरवाज़े खोल दिए जाएंगे वह नफ़्से ख़न्नास के शरों और बुरे ख़्यालात व वसाविस से मह़फ़ूज़ हो जाएगा और उसे दहरो क़ब्रो ह़श्र में अल्लाह और उस के ह़बीब ﷺ की अज़ीम खुश्नूदी ह़ासिल होगी उसे आप ﷺ का कुर्ब पाने वाले फिरिश्तों के ह़म्द का फ़ैज़ मिलेगा उस के तमाम गुनाह मिटा दिए जाएंगे उस के ज़ाहिरो बात़िन हर नाफ़रमानी वाले कामों से मह़फ़ूज़ होजाएंगे उसे मज्लिसे मोह़म्मदी ﷺ में ह़ाज़िर होने की तौफ़ीक़ नसीब होगी उसे आ़लमे अरवाह़ के फ़ैज़ान से नवाज़ा जाएगा वह मक़ामे एह़सान वालों में से शुमार किया जाएगा वह क़ब्र में हर वह़शतो तकलीफ़ और

अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रहेगा हश्र के रोज़ उस का चेहरा इस क़दर रौशन होगा कि लोग हैरत से पूछेंगे यह कौन है और यह कौन सा अ़मल करता था, उस के जुम्ला अरकाने इस्लाम इस नमाज़ की बरकत से दुरूस्त हो जाएंगे उस पर तमात ग़ैब की चीज़ें खोल दीजाएंगी मुख़्तसर यह कि उसे दुन्या और आख़िरत की बे शुमार नेअ़मतों से नवाज़ा जाएगा और उसे कलामे पाक की आयते मुबारका "**रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह़ स नतौं व फ़िल्आख़िरति ह़ स नतौं वक़िना अ़ज़बन्नारि**" (ऐ हमारे पालनहार तू हमें दुन्या और आख़िरत में भलाईयाँ अ़ता फ़रमा और हमें आग के अ़ज़ाब से बचाले) का कामिल फ़ैज़ मिलेगा इस नमाज़ की फ़ज़ीलतें बेशुमार हैं जिन्हें कोई एह़ाता नहीं कर सकता बारगाहे अरह़मुर्राह़िमीन में दुआ़ है कि मौला तआ़ला इस नमाज़ को हर मर्दो औ़रत और ख़ासो आ़म को ग़ौरो फ़िक्र,

हुज़ूरे क़ल्ब और लिल्लाहियत के साथ पढ़ने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और इस की बरकतों से जुम्ला उम्मते मोहम्मदी ﷺ को माला माल फ़रमाए। आमीन।

## ईमानो इस्लाम व एह़सान की नफ़्ल नमाज़ें यह हैं

सलामतिये ईमान की नियत से 2 रकअ़त नमाज़ नफ़्ल इस त़रह़ अदा करे कि पहली रकअ़त में सना और सूरए फ़ातिह़ा के बाद आयतुल्कुर्सी 1बार और सूरए इख़्लास़ 3 बार और दूसरी रकअ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बाद सूरए फ़लक़ और सूरए नास 1/1 बार पढ़े।

इस्लाम का फ़ैज़ पाने की नियत से2 रकअ़त नमाज़ नफ़्ल इस त़रह़ अदा करे कि पहली रकअ़त में सना और सूरए फ़ातिह़ा के बाद सूरए काफ़िरून 10 बार और दूसरी रकअ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बाद सूरए इख़्लास़ 10 बार पढ़े।

एह़सान का फ़ैज़ पाने की नियत से 2 रकअ़त नमाज़ नफ़्ल इस त़रह़ अदा करे कि पहली रकअ़त में सना और सूरए फ़ातिह़ा के बाद सूरए ह़श्र की आख़िरी 3 आयत 7 बार और दूसरी रकअ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बाद सूरए इख़्लास़ 7 बार पढ़े।

सूरए ह़श्र की आख़िरी तीन आयतें यह हैं:

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम।

हुवल्लाहुल्लज़ी लाइलाह इल्लाहु व आ़लिमुलग़ैबि वश्शहादति हुवर्रह़मा नुर्रह़ीमु हुवल्लाहुल्लज़ी लाइला ह इल्ला हुवल मलिकुल्कुद्दूसुस्सलामुल मुअमिनुल मुहैमिनुल अ़ज़ीजुल्जब्बारुल्मुत कब्बिरु सुब्ह़ानल्लाहि अ़म्मा युश्रिकून हुवल्लाहुल ख़ालिकुल्बारिउल मुसव्विरु लहुल अस्माउल्हुस्ना युसब्बिहु लहू माफ़िस्समावाति वल्अर्दि वहुवल

अ़ज़ीजुल ह़कीमु।

इस के बाद यह दुआ़ए मासूरह ईमान इस्लाम और एह़सान की नियत से 3 बार पढ़े।

**दुआ़ए मासूरहः** अल्लाहुम्मग्फ़िरली वलि वालि दय्य वलिमन तवा ल द व लिमन अह़ब्बनी वलिजमीइ़ल मुअमिनी न वल मुअमिनाति वल मुस्लिमी न वल मुस्लिमातिल अह़याइ मिन्हुम वल अम्वाति अज्मइ़ न बिरह़ मति क या अर्ह़मर्राह़िमीन।

# दरसे रूह़ानी

हर इन्सान को चाहिए कि इस रात में आक़ा ﷺ की सुन्नत पर अ़मल करते हुए क़ब्रस्तान जाकर जुम्ला मरहूमीन के लिए इस्तिग़फ़ार व दुआ़ करे और दुआ़ में मज्कूरह दुआ़ए मासूरह 3 बार ज़रूर पढ़े और उन के

लिए नफ़्ल नमाज़ों और रोज़ों ज़िक्रो अज़्कार नीज़ कल्मा व दुरूद शरीफ़ का सवाब नज़्र करे क़ब्रस्तान में दाख़िला के वक़्त यह दुआ पढ़े'' अस्सलामु अ़लैकुम या अह ल कुबूरिल्मुस्लिमीन अन्तुम लना स ल फुन व इन्ना इन्शाअल्लाहु बिकुम लाहिकून नस्अलुल्लाह लना व लकुमुल्अ़फ़्व वल्आ़फ़िय त''

**तर्जमाः** ऐ इस्लामी क़ब्र वालो तुम पर सलाम्ती नाज़िल हो तुम हम से पहले हो और हम इन्शाअल्लाह तुम से मिलने वाले हैं हम अल्लाह से अपने लिए और तुम्हारे लिए मुआ़फ़ी और आ़फ़ियत का सुवाल करते हैं।

फिर दरजे ज़ैल दुरूद शरीफ़ पढ़े इस दुरूद को एक मर्तबा पढ़ने के नतीजे में अल्लाह तआ़ला मुर्दों पर से 70 साल के लिए और 4 दफ़्आ़ पढ़ने पर क़ियामत तक का अ़ज़ाब उठा लेता है 24 मर्तबा पढ़ने वाले के वालिदैन की मग़फ़िरत हो जाती है और अल्लाह तआ़ला

फ़िरिश्तों को हुक्म देता है कि इस के वालिदैन की क़ियामत तक ज़ियारत करते रहो।

# दुरूदे पाक

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम। अल्लाहुम्म स़ल्लि अ़ला मुह़म्मदिम्मा दामतिस्स़लातु व स़ल्लि अ़ला मुह़म्मदिम्मा दामतिर्रह़मतु व स़ल्लि अ़ला रूह़ि मुह़म्मदिन फ़िल्अर्वाह़ि व स़ल्लि अ़ला सूरति मुह़म्मदिन फ़िस्सुवरि व स़ल्लि अ़ला इस्मि मुह़म्मदिन फ़िल्अस्माइ व स़ल्लि अ़ला नफ़्सि मुह़म्मदिन फ़िन्नुफ़ूसि व स़ल्लि अ़ला क़ल्बि मुह़म्मदिन फ़िल्क़ुलूबि व स़ल्लि अ़ला क़ब्रि मुह़म्मदिन फ़िल्क़ुबूरि व स़ल्लि अ़ला रौद़ति मुह़म्मदिन फ़िर्रियादि व स़ल्लि अ़ला ज स दि

मुह़म्मदिन फ़िल्अज्सादि व स़ल्लि अ़ला तुर्बति मुह़म्मदिन फ़ित्तुराबि व स़ल्लि अ़ला ख़ैरि ख़ल्क़िही व जुर्रीयतिही व अहलि बैतिही व अह़बाबिही अज्मई़न बिरह़मति क या अर्ह़मर्राह़िमीन।

इस के बाद मज्कूरह दुआ़ए मासूरह ३ बार पढ़े।

इस महीने की 14/15 शअ़बान को रोज़ा रखे और ह़स्बे इस्तित़ाअ़त लोगों के लिए सेह़री व इफ़्त़ारी का इन्तिज़ाम करे लोगों के साथ हुस्ने खुल्क़ के साथ पेश आए ग़रीब व नादार और मरीज़ों की इम्दाद करे और ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को खाना खिलाए और हर ज़ाहिरी व बातिनी गुनाहों से स़िदक़ दिल के साथ तौबा करे ताकि अअ़माल नामे से उन गुनाहों को मिटा दिया

जाए और अइन्दा उसे हुस्ने खुल्क़ और नेक अअ़माल की तौफ़ीक़ मिले बिल्खुसूस अपने तमाम अअ़माल का मुहास्बा करे अगर कोई अ़मले ख़ैर सामने आए तो उस पर अल्लाह का शुक्र अदा करे और बुराई याद आए तो उस पर इस्तिग़फ़ार करे और फ़ौरन उसे छोड़ देने का अ़हद करे बल्कि ह़ज़रत मक्हूल शामी रह़मतुल्लाहि अलैह फ़रमाते है कि आदमी जब बिस्तर पर जाए तो फ़ौरन अपने तमाम दिन के अअ़माल का मुहास्बा करे और रोज़ाना तौबा व इस्तिग़फ़ार करे अगर कोई शख़्स यह काम नहीं करता तो उस की मिसाल उस ताजिर की त़रह़ है जो माल ख़र्च करता रहता है और ह़िसाब नहीं करता यहाँ तक कि एक दिन मुफ़्लिस हो जाता है, एक दाना का क़ौल है कि ह़िक्मत 4 चीज़ों से पैदा होती है 1. ऐसा बदन जो दुन्यवी मशाग़िल से ख़ाली हो 2. ऐसा पेट जो दुन्यवी ख़ुराक से ख़ाली हो 3. ऐसा हाथ

जो दुन्यवी मालो मताअ़ से ख़ाली हो 4. दुन्या के अन्जाम में ध्यान रखना यअ़नी अपना अन्जाम पेशे नज़र रखना कुछ पता नहीं क्या होगा मअ़लूम नहीं कि अअ़माल क़बूल होंगे या नहीं क्यों कि अल्लाह तआ़ला अअ़माले त़य्यिब ही क़बूल फ़रमाता है।

## मक़बूल इन्दल्लाह अअ़माल.....

## सिर्फ़ अच्छे अअ़माल

फ़क़ीह नस्र बिन मोहम्मद अबुल्लैस समरक़न्दी रह़मतुल्लाहि अ़लैह फ़रमाते हैं कि ह़ज़रत ख़ालिद बिन महरान रह़मतुल्लाहि अ़लैह फ़रमाते हैं कि मैं ने ह़ज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से कहा कि मुझे कोई ऐसी ह़दीस सुनाओ जो आप ने हुज़ूर ﷺ से सुनी हो और उसे याद रखा हो, फिर अव्वल दिन से रोज़ाना उस को ब्यान भी किया हो ह़ज़रत मुआ़ज़ रदि़

यल्लाह अ़न्हु यह सुन कर रोपड़े और इतना रोए कि मैं सोचने लगा कि शायद अब चुप नहीं होंगे बिल आख़िर चुप होगए और फ़रमाने लगे कि मैं हुज़ूर अक़्दस ﷺ के पीछे सवार था मैं ने अ़र्ज़ किया मेरे माँ बाप आप पर कुर्बान हों या रसूलल्लाह ﷺ मुझे कोई बात सुनाइये आप ﷺ ने निगाह आस्मान की त़रफ़ उठाई और फ़रमाया कि तमाम तअ़रीफ़ें उस ज़ात केलिए हैं जो अपनी मख़्लूक़ में जैसा चाहता है फ़ैस्ला फ़रमाता है फिर इरशाद हुवा ऐ मुआ़ज़ मैं ने अ़र्ज़ किया लब्बैक या रसूलल्लाह ﷺ ऐ भलाई के इमाम और रह़मत वाले नबी ﷺ फ़रमाया मैं तुम्हें ऐसी बात बताता हूँ जो किसी नबी ने अपने उम्मती को नहीं बताई अगर इसे याद कर लोगे तो तुम्हें नफ़अ़ देगी और अगर यूँही छोड़ दिए और याद न किए तो क़ियामत के दिन अल्लाह के हुज़ूर तुम्हारा कोई उ़ज़्र न होगा फिर फ़रमाया अल्लाह तआ़ला ने ज़मीनो आस्मान बनाने से पहले सात फ़िरिश्ते

बनाए गोया हर आस्मान के लिए एक फ़िरिश्ता, इन में से हर एक को आस्मान के दरवाज़े पर मुक़र्रर फ़रमाया।

मुहाफ़िज़ फ़िरिश्ते सुब्ह से शाम तक बंदे के अ़मल लिखते रहते हैं फिर ऊपर लेकर जाते हैं कि उन अ़मल में से सूरज की त़रह़ शोआएं फूटती हैं आस्माने दुन्या पर पहुंचते हैं तो फ़िरिश्ता कहता है ज़रा ठहरो इस अ़मल को इस के आ़मिल के चेहरा पर जा मारो और कह दो कि तेरी कोई मग़फ़िरत नहीं मैं ग़ीबत से तअ़ल्लुक़ रखने वाला फ़िरिश्ता हूँ यह शख़्स मुसल्मानों की ग़ीबत किया करता था, मैं इस के अ़मल को आगे जाने की कभी इजाज़त नहीं दूंगा ।

फिर फ़रमाया एक और बंदे के अ़मल लेकर फ़िरिश्ते ऊपर जाएंगे उस से भी नूर फूट रहा होगा ह़त्ता कि दूसरे आस्मान तक पहुंच जाएंगे वहाँ पर एक फ़िरिश्ता कहेगा ज़रा ठहरो इस अ़मल को इस के आ़मिल के मुंह पर मार दो, और कह दो कि तेरी कोई मग़फ़िरत नहीं है इस अ़मल से इस का मक़्सूद दुन्यवी

मालो मताअ़ था और मैं दुन्यावाले अअ़माल पर मुक़र्रर हूँ लिहाज़ा इसे आगे नहीं जाने दूंगा।

फिर फ़रमाया एक और बंदे के अअ़माल लेकर फ़िरिश्ते ऊपर जाएंगे, जिन पर उसे खूब नाज़ और एअ़तिमाद होगा सदक़ा और नमाज़ वग़ैरह अअ़माल के फ़िरिश्ते भी उन पर तअ़ज्जुब करेंगे तीसरे आस्मान तक पहुंच जाएंगे तो वहाँ का फ़िरिश्ता पुकारेगा ठहरो और इन अअमाल को इन के मालिक के मुंह पर दै मारो और कहो कि तेरी कोई बख़्शिश नहीं,मैं तकब्बुर से तअ़ल्लुक़ रखने वाला फ़िरिश्ता हूँ और मुझे मेरे अल्लाह ने हुक्म दे रखा है कि जो शख़्स अअ़माल के साथ साथ तकब्बुर भी करता है उस के अअ़माल आगे हरगिज़ न गुज़रने दूँ।

फिर फ़रमाया कि एक और बंदे के अअ़माल फ़िरिश्ते लेकर ऊपर जाएंगे जो सितारों की त़रह़ चमकते होंगे तस्बीह़ और रोज़ा वग़ैरह है आस्मान पर से गुज़रेंगे तो फ़िरिश्ता कहेगा ठहरो यह अअ़माल इस आ़मिल के मुंह

पर मार दो और बताओ कि तेरे लिए कोई बख़्शिश नहीं है, मै खुद पसंदी का फ़िरिश्ता हूँ मुझे मेरे रब का हुक्म है कि जो शख़्स अमल करता है मगर उज्ब और खुद पसंदी में भी मुब्तला है उस के अ़माल आगे न जाने दूँ, चुनान्चे अ़माल उस के मुंह पर मार दिए जाते हैं जो उस पर तीन दिन तक लअ़नत भी करते रहते हैं।

एक और बंदे के अ़माल को मुहाफ़िज़ फ़िरिश्ते दूसरे फ़िरिश्तों के झुर्मुट में यूं लेकर जाते हैं जैसे नई दुल्हन को रूख़्सती के वक़्त हुजूम ले कर चलता है यह पांचवे आस्मान के फ़िरिश्ते तक पहुंच जाते हैं यह अ़माल जिहाद पर और दो नमाज़ों के दरमियान नवाफ़िल वग़ैरह पर मुश्तमिल हैं मगर फ़िरिश्ता कहता है ठहरो इन अ़माल को आ़मिल के मुंह पर मार दो और उसी के कंधों पर लाद दो यह शख़्स दीन सीखने वालों और अल्लाह के लिए अ़मल करने वालों पर ह़सद किया करता था और उन की ऐब चीनी करता था फ़िरिश्ते इन

अ़माल को उसी के कंधों पर लाद देते हैं और जब तक वह जीता है लअ़नत भी करते हैं।

फिर फ़रमाया एक और बंदे के अ़माल लेकर फ़िरिश्ते जाते हैं उन में अ़ला क़िस्म के वुज़ू का अ़मल तहज्जुद और नवाफ़िल वग़ैरह के कसीर अ़माल हैं फ़िरिश्ते छटटे आस्मान तक पहुंचते हैं तो वहाँ का फ़िरिश्ता कहता है ठहरो और इन अ़माल को उसी शख़्स के मुंह पर मार दो मैं रह़मत वाला फ़िरिश्ता हूँ इन अ़माल वाला शख़्स किसी पर कुछ भी रह़म नहीं खाता था, अल्लाह का कोई बंदा किसी गुनाह में मुब्तला होता या किसी को तकलीफ़ में मुब्तला देखता तो यह खुश हुवा करता था मेरे रब ने मुझे हुक्म देरखा है कि इस के अ़माल हरगिज आगे न जाने दूंगा ।

फ़िर फ़रमाया कि एक और बंदे के सिदक़, मेह़नतो रियाज़त, तक़्वा व तक़दुस जैसे अ़माल लेकर फ़िरिश्ते ऊपर जाएंगे जो बिजली की त़रह़ चमकते होंगे सातवें

आस्मान तक पहुंचेगे तो फ़िरिश्ता कहेगा ठहर जाओ और यह अ़मल करने वाले के मुंह पर दै मारो और इस के क़ल्ब पर कुफ़्ल लगादो, मैं हि़जाब वाला फ़िरिश्ता हूँ हर उस अ़मल को रोक लेता हूँ जो अल्लाह के लिए न हो इस शख़्स़ ने दुन्यवी मजालिस में और शहर शहर में अपनी वजाहत और शोहरत का इरादा किया था मेरे रब ने मुझे हुक्म देरखा है कि ऐसे शख़्स़ का अ़मल आगे न जाने दूँ।

फिर इरशाद फ़रमाया कि फ़िरिश्ते एक और बंदे के अअ़माल लेकर ऊपर जाते हैं जो बहुत ही उ़म्दा और खुश कुन होते हैं जिन्में अख़्लाक़े ह़स्ना ख़ामोशी और ज़िक्रे कसीर वग़ैरह शामिल हैं आस्मान के फ़िरिश्ते उन के साथ साथ एअ़ज़ाज़ में चलते हैं ह़त्ता कि वह अ़र्श के नीचे पहुंच जाते हैं और उस शख़्स़ के लिए गवाही देते हैं, तो अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है तुम तो मेरे बंदे के अअ़माल पर निगराँ हो और मैं उस के दिल पर

निगाह रखता हूँ, इस ने अ़माल में मेरी रज़ा का इरादा नहीं किया बल्कि इसे मेरा ग़ैर मत्लूब था लिहाज़ा इस पर लअ़नत भेजता हूँ तमाम फ़िरिश्ते भी पुकार उठते हैं कि इस पर तेरी भी लअ़नत और हमारी भी और तमाम अहले आस्मान की, कहते हैं कि उस पर अल्लाह तआ़ला की लअ़नत सातों आस्मान और तमाम ज़मीनों की लअ़नत और हमारी भी लअ़नत हो।

फिर ह़ज़रत मुआ़ज़ रदि़यल्लाहु अ़न्हु रोने लगे और फ़रमाया कि मैं ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह ﷺ मैं क्या अ़मल इख़्तियार करूँ इरशाद फ़रमाया पूरे यक़ीन के साथ अपने नबी ﷺ की पैरवी इख़्तियार करो अगरचे अ़मल कुछ कम ही हो, अपने भाइयों से अपनी ज़बान बंद करलो तुम्हारे गुनाह तुम्हीं पर रहना चाहिए, उन का वबाल तुम्हारे भाइयों पर नहीं पड़ना चाहिए, अपनी पाक दामनी का तज़्किरा और भाइयों की मज़म्मत मत करो अपने भाइयों को गिराकर खुद को ऊंचा मत करो किसी

अ़मल में भी लोगों को दिखाने और रियाकारी की नियत न करो। (तन्ज़ीहुश्शरीअ़ह अल्मरफूअ़ह 2/287 बह़वाला तम्बीहुल्ग़ाफ़िलीन सफ़ा 583)

बारगाहे रब्बुल आ़लमीन में दुआ़ है कि हमें खुलूसे़ लिल्लाहियत के साथ इ़बादते इलाही व इ़ताअ़ते मुस्त़फ़ा ﷺ की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए और हम पर इन आठ दरवाज़ों को अपने ह़बीब ﷺ व अहले बैत व अस्ह़ाबे किराम व जुम्ला औलियाए किराम के स़दक़े खोल रखे और हमें उन अअ़मालो अफ़्आ़ल से मह़फ़ूज़ फ़रमाए जो इन दरवाज़ों के बंद रहने का सबब बनते हैं।

آمِیْن بِجَاہِ سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَصَلَّی اللّٰہُ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّاٰلِہٖ وَصَحْبِہٖ وَاَوْلِیَاءِ اُمَّتِہٖ اَجْمَعِیْنَ۔

**नोटः-** आस्तान-ए-ह़ज़रात मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ رضی اللہ عنہم से मुतअ़ल्लिक़ जुम्ला मत़बूआ़त मस्तन "दुरूदे रूह़ानी व दोआ़-ए-क़ल्बी, दुरूदे मोह़म्मदी, सलामे मोह़म्मदी मअ़ अस्रारे "मीम ह़ा मीम दाल" और दुरूदे चहल मीम" वग़ैरह **www.syed14peer.com** पर मुलाह़ज़ा कर सकते हैं।

آستانہ حضرات مخدومین سادات چودھوں پیراں (علیہم الرحمۃ والرضوان) الہ آباد

www.syed14peer.com